वह अभ्यास बंद कर देता है तो सीखने की प्रक्रिया धीमी होने लगती है।

(5) परिपक्वन की क्रिया एक खास उम्र या अवस्था आने पर बिलकुल ही मन्द या नहीं के बराबर होती है। जैसे वयस्कता (adulthood) के बाद परिपक्वन की क्रिया सामान्यतः नहीं होती देखी गयी है परंतु सीखने की क्रिया आजीवन चलती रहती है। ऐसी कोई अवस्था नहीं होती है जिसके बाद सीखने की क्रिया का होना बन्द हो जाता है। व्यक्ति बुढ़ापे में भी नई - नई प्रक्रियाओं को सीखता है।

(6) परिपक्वन से शरीर में काफी बदलाव आते हैं। शरीर के भीतरी अंगों का तथा बाहरी अंगों का काफी विकास हो जाता है। सीखने की प्रक्रिया से शरीर के अंगों में कोई परिवर्तन नहीं आता है। इस प्रकार से उसका बचपना समाप्त हो जाती है और वह परिपक्वन की श्रेणी में शामिल हो जाता है।

(7) परिपक्वन एक शारीरिक क्रिया (physiological Process) है जबकि सीखना एक मानसिक या मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया (mental or Psychological Process)

है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि परिपक्वन का संबंध शरीर के अंग-प्रत्यंग के विकास से होता है जबकि सीखने का संबंध ऐसे विकास से नहीं बल्कि व्यवहार में किए गए किसी खास परिवर्तन से होता है जो स्पष्टतः एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।

(8) सीखने की क्रिया परिपक्वन पर निर्भर करती है परंतु परिपक्वन की क्रिया सीखने पर नहीं। जैसे एक दो साल का बालक कितना भी अभ्यास क्यों न करे तबतक वह लिखना या स्पष्ट रूप से कोई किताब पढ़ना नहीं सीख सकता क्योंकि उसके अंग का परिपक्वन पूरा नहीं हुआ है। स्पष्ट है कि सीखने की प्रक्रिया परिपक्वन के अभाव में संभव नहीं है। दूसरी तरफ, परिपक्वन के लिए किसी भी तरह का सीखना आवश्यक नहीं है। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि जब तक एक दो साल का बच्चा लिखना-पढ़ना सीख नहीं लेता है, उसके हाथ-पैर या शरीर के अन्य अंगों की मांसपेशियाँ परिपक्व नहीं होंगी।

उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है कि यद्यपि परिपक्वन तथा सीखने दोनों

में ही व्यवहार में परिवर्तन होता है, परंतु ये दोनों प्रक्रियाएँ एक-दूसरे से भिन्न हैं।